पुतले

आनंद हर्षुल

पुतले

आनंद हर्षुल

आनंद हर्षुल

23 जनवरी 1959 को छत्तीसढ़ के एक गाँव बगिया (रायगढ) में जन्म। कानून तथा पत्रकारिता में स्तानक।

उनका पहला कहानी संग्रह 'बैठे हुए हाथी के भीतर लड़का' 1997 में प्रकाशित हुआ। उसके बाद 'पृथ्वी को चंद्रमा' 2003 में, 'अधखाया फल' 2009 तथा 'रेगिस्तान में झील' 2014, उनकी कहानियों का चौथा संग्रह है-- जिसमें उनकी प्रारंभ से 2001 तक की कहानियाँ संकलित हैं। 'बैठे हुए हाथी के भीतर लड़का' के लिए मध्य प्रदेष साहित्य परिषद के 'सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार' (1997) 'पृथ्वी को चन्द्रमा' के लिए 'विजय वर्मा अखिल भारतीय कथा सम्मान' (2003) एवं समग्र लेखन के लिए 'वनमाली कथा सम्मान' (2014) से सम्मानित। कहानियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद।

पुतले

वे सीमेंट के थे- छः पुतले। सीमेंट के रंग की ही साँवली त्वचा लिए। काँच की रंगीन गोलियों और चीनी मिट्टी के टूटे बर्तनों से, उनकी त्वचा सजी थी। इन काँच की गोलियों का खेल, बच्चे अब भूल चुके थे। बच्चे अब कम्प्यूटर के सामने बैठकर, दुनिया से खेल रहे थे। कम्प्यूटर के भीतर काँच की गोलियों का उस तरह का कोई खेल नहीं था जैसा धरती पर कभी, उन बच्चों के पूर्वजों के बचपन में था। यही हाल चीनी मिट्टी के बर्तन का भी था, वे इस तरह तड़क चुके थे कि अब किसी काम के नहीं बचे थे और खाने की टेबल बाहर हो गए थे।

पुतलों की देह, मनुष्य के इस्तेमाल से बाहर आ गयी चीजों से सजी बनी थी। यह अलग बात है कि मनुष्य के कारीगर हाथ उनकी देह पर झिलमिलाते से दिख रहे थे: मनुष्य की अंगुलियों की झिलमिलाती थाप ।

पुतलों का कद बहुत बड़ा नहीं था। वे बच्चों के कद में जैसे बड़ों का चेहरा पहने हुए थे। इनमें चार पुरुष थे और दो स्त्रियाँ। स्त्रियाँ, पुरुषों के बीच थीं। सर पर टोकरी रखीं। एक स्त्री की टोकरी में मछलियाँ थीं और दूसरी स्त्री की टोकरी में सब्जियाँ । टोकरी में रखी मछलियाँ, बरसों हो गए अब तक सड़ी नहीं थीं और सब्जियाँ अब भी ताजी थीं। सीमेंट के पुरुषों की पीठ, उनके बीच में खड़ी उन दो सीमेंट की स्त्रियाँ की ओर थीं । पुरुष-पुतले, स्त्री-पुतलों को नहीं, पृथ्वी की चार दिशाओं को देखते खड़े थे। पृथ्वी की चारों दिशाएँ, पुरुष-पुतलों के कंचे की आँखों में आकर डूब रही थीं।

इन छः पुतलों के चारों ओर लोहे की मोटी छड़ों से बना गोल घेरा था। घेरा, सड़क से ढ़ाई फुट ऊँचे, ईंटों के गोल प्लेटफार्म पर गड़ा हुआ था। लोहे की छड़ों के सिरों पर भाले थे। भालों की नोक, पुतलों को देखो तो ऑंखों में चुभती थी। यह किसी को मालूम नहीं था कि पुतले जब घेरे के बाहर देखते हैं तो उनकी कंची आँखों में भाले की छाया गड़ती है या नहीं... कोई यह सोचता ही नहीं था कि पुतले भी देखते होंगे। स्त्री-पुतले, स्त्री की तरह और पुरुष-पुतले, पुरुषों की तरह देखते होंगे। इस चौक से जितना उन्हें दिखता होगा। देखते होंगे उतना।

उन पुतलों के आसपास, लोहे के गोल और नुकीले घेरे के भीतर, मखमली घास उगी थी हरी। हरी घास के ऊपर फूलों के छोटे-छोटे पौधे उभरे हुए थे- कुछ इस तरह कि कोशिश कर थोड़ा और उभरना चाह रहे हों... थोड़ा और आसमान की ओर उठना... थोड़ा और पुतलों के कद को छूने की कोशिश करना चाह रहे हों... उन उभरते फूलों ने, उस गोल घेरे को चटक रंगों से भर दिया था। नीला, पीला, लाल बैगनी। रंगों में, भालों की नुकीली और लोहे के स्वाद-सी छाया, कहीं-कहीं गड़ी-सी दिख रही थी।

इन फूलों के पास, बच्चों को भाने वाले सभी रंग थे। कभी कोई रंग फूलों का खटकता था बच्चों के मन में तो आश्चर्य कि फूल अपना रंग बदल लेते थे। जबकि बच्चे, उन फूलों को उस व्यस्त चौराहे के गुजरते हुए, बस एक झलक ही देख पाते थे। बच्चों की उस एक झलक में उपजी खटक को, सीमेंट के इन पुतलों के आस-पास उगे फूल तुरंत पकड़ लेते थे और मुस्कुराते हुए अपना रंग बदल देते थे कि बच्चा जब अगली बार गुजरे चौराहे से तो अपनी पसंद का रंग, फूलों में देख सके।

फूल ऐसे खिले थे, जैसे वे पुतलों को छूने की कोशिश कर रहे हों। हरी घास इस तरह बेचैन थी, जैसे वह ऐसी हलचल अपने भीतर चाह रही हो कि पुतले जो दिखने में बड़ों की तरह थे, वे मन से बच्चे बन, उस पर खेल सकें। फूल और घास की इस कोशिश को आसमान ध्यान से देख रहा था और आसमान का नीला रंग, पुतलों के लिए हो रही, फूल और घास की इस निश्छल कोशिश पर झर रहा था...

चौक की गोल ऊंचाई पर उगी, इस हरी घास की जमीन पर, फूलों के पौधों के साथ-साथ, वे पुतले भी उगे हुए से ही थे- मनुष्य की गढ़ी थोड़ी सजावटी और थोड़ी बनावटी उस घास की हरी ऊँचाई-निचाई पर । इसीलिए वे छः पुतले एक दूसरे से थोड़ा ऊपर नीचे खड़े थे। स्त्री- पुतलियाँ ढाल पर थीं, कुछ इस तरह कि चौक से उतरकर बाजार चली जाएँगी- सब्जी और मछली बेचने और पुरुष-पुतले ,अपने सामने दिखती दिशाओं पर निकल पड़ेंगे, अनंत यात्रा पर जो समुद्र के किनारे जाकर खत्म होगी या समुद्र के तल पर, अथाह जल के नीचे।

पुतले इस शहर के सबसे अभिजात्य चौक पर खड़े थे। सिविल लाइन्स स्क्वैअर पर। शहर इसी चौक से उत्पन्न होने और इसी चौक पर समाप्त होने के लिए अभिशप्त था। यह चौक उस कॉलोनी के मध्य में था जो अपनी